4. सर्वोच्चता के लिए आंग्ल – फ़्रांसीसी संघर्ष

4.1 पृष्ठभूमि

अपने व्यापारिक हितों के कारण अंग्रेजी और फ्रांसीसी कंपनियों द्वारा अनिवार्य रूप से भारतीय आंतरिक राजनीति में दखल दिया जाने लगा। मुगल केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने के बाद, दक्कन के मुगल शासक, अधीनस्थ अधिकारियों की मांगों तथा मराठों के छापे से यूरोपीय कंपनियों के व्यापारिक हितों की रक्षा करने में समर्थ नहीं थे। इसलिए, यूरोपीय कंपनियां इस निष्कर्ष पर पहुंची कि उन्हें स्वयं की सुरक्षा हेतु अपने सैन्य बलों को विकसित करना चाहिए। ब्रिटिश और फ्रांसीसी दोनों कंपनियां अपने लाभ को अधिकतम करना चाहती थीं। उन्होंने सभी प्रकार की प्रतिस्पर्धा को कम कर एकाधिकार प्राप्त करना चाहा।

4.2 कर्नाटक युद्ध

भारतीय इतिहास में **कर्नाटक युद्ध** के अन्तर्गत, तीन युद्ध लड़े गये। ये युद्ध अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेज़ों तथा फ़्राँसीसियों के बीच लड़े गये थे। ये युद्ध अंग्रेज़ों और फ़्राँसीसियों की प्रतिद्वन्द्विता के परिणामस्वरूप हुए तथा उनकी यूरोप में प्रतिस्पर्द्धा से भी सम्बन्धित थे। ये युद्ध अठारहवीं शताब्दी के आंग्ल-फ़्राँसीसी युद्धों का ही एक भाग थे। इनको **'कर्नाटक युद्ध'** इसलिए कहा जाता है ,क्योंकि ये भारत के कर्नाटक प्रदेश में लड़े गये थे।

भारत के इतिहास में जो तीन कर्नाटक युद्ध लड़े गये थे :

- **प्रथम युद्ध (1746 - 1748 ई.)**
- **द्वितीय युद्ध (1749 - 1754 ई.)**
- **तृतीय युद्ध (1756-63 ई.)**

4.2.1 प्रथम युद्ध (1746 - 1748 ई.)

- **प्रथम कर्नाटक युद्ध** 1746-1748 ई. तक लड़ा गया था। यह युद्ध **'ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध'** से प्रभावित था, जो 1740 से ही चल रहा था। यूरोप में फ़्राँस और ब्रिटेन एक-दूसरे के प्रबल विरोधी थे, अत: भारत में भी इस विरोध का असर पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेज़ और फ़्राँसीसी सेनाओं के मध्य 1746 में युद्ध प्रारम्भ हो गया।
- तत्कालीन पाण्डिचेरी गवर्नर (फ़्राँसीसी) डूप्ले युद्ध के पक्ष में नहीं था। उसने प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेज़ अधिकारियों से बात की, पर कोई समाधान न निकल सका। अंग्रेज़ अधिकारी 'बर्नेट' द्वारा कुछ फ़्राँसीसी जहाज़ों पर क़ब्ज़ा कर लेने के उपरान्त डूप्ले ने मॉरीशस के गवर्नर 'ला बोर्दने' के सहयोग से मद्रास को घेर लिया था। 21 सितम्बर, 1746 को मद्रास ने आत्मसमर्पण कर दिया, परन्तु डूप्ले अपने लक्ष्य 'फ़ोर्ट सेण्ट डेविड' को जीतने में असफल रहा।
- कर्नाटक का प्रथम युद्ध **'सेण्ट टोमे'** के युद्ध के लिए स्मरणीय है। यह युद्ध फ़्राँसीसी सेना एवं कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के मध्य लड़ा गया था ।
- आस्ट्रिया पर उत्तराधिकार का युद्ध, जो 1740 ई. में प्रारम्भ हुआ था और अप्रत्यक्ष रूप से प्रथम कर्नाटक युद्ध के लिए भी उत्तरदायी था, 1748 ई. में सम्पन्न **'एक्स-ला-शापल की सन्धि'** के द्वारा समाप्त हो गया। इसी सन्धि के तहत प्रथम कर्नाटक युद्ध भी समाप्त हुआ और सन्धि में निश्चित की गईं शर्तों के अनुसार फ़्राँसीसियों ने मद्रास अंग्रेज़ों को वापस कर दिया।

VISION IAS